Answers to RHB–DS2/Set–3

1. (*i*) (क) अंतरमन की भावनाएँ बाहरी दबाव का कारण बन जाती हैं।
   (*ii*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   (*iii*) (ख) बाहर का दबाव वास्तव में भीतरी उन्मेष का कारण होता है।
   (*iv*) (घ) आत्मनिर्भरता
   (*v*) (ग) सहायक यंत्र की तरह
2. (*i*) (क) आकस्मिक मुसीबत के समय पड़ोसी काम आता है।
   (*ii*) (घ) सामाजिक बंधुत्व की भावना
   (*iii*) (ख) पड़ोसी के व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करना
   (*iv*) (ग) विश्व-बंधुत्व की भावना जागृत की जा सकती है।
   (*v*) (क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
3. (*i*) (क) संज्ञा पदबंध
   (*ii*) (ग) लौट रहे थे
   (*iii*) (क) मुझे दुनिया और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते।
   (*iv*) (ग) विशेषण पदबंध
   (*v*) (घ) क्रियाविशेषण पदबंध
4. (*i*) (ग) छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था।
   (*ii*) (क) सरल वाक्य
   (*iii*) (ग) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)
   (*iv*) (घ) आखिर उनका भी घर है, लेकिन उनके आने-जाने से हमें परेशानी भी होती है।
   (*v*) (ग) मिश्र वाक्य
5. (*i*) (ख) कर्मधारय समास
   (*ii*) (क) चार राहों का समाहार
   (*iii*) (ख) (*ii*) और (*iv*)
   (*iv*) (ख) सद् है जो आचार – कर्मधारय समास
   (*v*) (ग) तुलसी से कृत – तत्पुरुष समास
6. (*i*) (घ) अपनी खिचड़ी अलग पकाना – पृथक कार्य करना
   (*ii*) (क) एड़ी-चोटी एक करना
   (*iii*) (ख) संकुचित विचारवाला होना
   (*iv*) (क) दाग लगना
   (*v*) (ख) छाती पर पत्थर रखना
   (*vi*) (ग) दाँत पीसना
7. (*i*) (क) छोटे लड़के उस पर घुड़सवारी नहीं करते हैं।
   (*ii*) (घ) अब अनुपयोगी हो गई है।
   (*iii*) (घ) उपर्युक्त सभी
   (*iv*) (ग) अत्याचारी का अंत अवश्य होता है।
   (*v*) (ख) शक्ति पर कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए।

8. (*i*) (ग) शहीद जवानों के रक्त से धरती का रंग लाल हो गया है।

(*ii*) (घ) पुष्प रूपी नेत्रों से पर्वत तालाब में अपना प्रतिबिंब देख रहे हैं।

9. (*i*) (क) उच्च आदर्शों का

(*ii*) (ख) (*ii*) और (*iii*)

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(*iv*) (घ) गिराया है।

(*v*) (क) आदर्शवादी लोगों ने समाज में आदर्शों को सदैव ऊपर उठाया है।

10. (*i*) (ख) (*i*), (*ii*) और (*iii*)

(*ii*) (घ) अति आत्मविश्वास का संचार हुआ

11. (क) पाठ में कवि हृदय तथा तीसरी कसम फ़िल्म के निर्माता निर्देशक शैलेंद्र ने फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े रहते हुए भी अपने आदर्शों को कभी नहीं छोड़ा। संपत्ति तथा यश कमाने की लिप्सा में उन्होंने अपने कर्तव्यों का त्याग नहीं किया। वे फिल्म इंडस्ट्री के तौर-तरीकों से वाकिफ थे परंतु उनमें उलझकर उन्होंने अपनी इंसानियत को कभी नहीं छोड़ा। 'श्री 420' फ़िल्म का एक बहुत लोकप्रिय गीत जिसे शैलेंद्र ने ही लिखा था– 'प्यार हुआ इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यों डरता है दिल' इसके अंतरे में उन्होंने दिशाओं को दस बताया है। फिल्म के संगीतकार जयकिशन ने जब इसमें आपत्ति जताई कि जनता दस नहीं बल्कि चार दिशाएँ ही जानती है तो शैलेंद्र ने उसे बदलने से साफ़ इनकार कर दिया क्योंकि उनका यह मानना था कि जनता की रुचियों और जानकारियों का परिष्कार करना ही एक साहित्यकार का धर्म होता है।

(ख) प्रस्तुत पाठ स्वतंत्रता दिवस की पहली वर्षगांठ के रूप में मनाए गए दिन पर आधारित है जब हमारे देश में अंग्रेज़ी सत्ता विद्‌मान होते हुए भी स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आज़ाद घोषित कर दिया था। उसी की पहली वर्षगांठ मनाने के लिए कलकत्तावासियों ने अंग्रेज़ी शासन व्यवस्था को खुला चैलेंज देते हुए पूरी शक्ति से झंडोत्सव मनाया तथा अन्य लोगों को भी उत्सव में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन में पुलिस द्‌वारा विरोध किए जाने पर भी लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्त्रियों तथा पुरुषों की इसमें बराबर की भागीदारी थी। बहुत से लोगों को पुलिस द्‌वारा मारा-पीटा गया, कितनों को उन्होंने लॉकअप में बंद कर दिया। अनेक लोग घायल अवस्था में भी झंडे को सँभाले थे। इससे यह सिद्‌ध हो गया था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बंगाल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।

(ग) 'कारतूस' एकांकी हमें यही सीख देती है कि अपने साहस, बुद्‌धिमता तथा दृढ़ता से मनुष्य किसी भी शक्ति का सामना कर जीत हासिल कर सकता है। एकांकी का मुख्य पात्र वज़ीर अली एक वीर योद्‌धा है जिसने अंग्रेज़ी सत्ता के आगे घुटने नहीं टेके। अपनी बुद्‌धि के कारण तथा साहस के बलबूते ही वज़ीर अली अकेला ही अंग्रेज़ी सरकार के खेमे में दाखिल होकर कर्नल से कारतूस लेने में कामयाब हो जाता है। अंग्रेज़ी सरकार के सैनिकों ने वज़ीर अली को पकड़ने के लिए जंगल में हफ़्तों से खेमा डाला हुआ था। परंतु वज़ीर अली उनकी पकड़ में ही नहीं आता था। सैनिक किसी भी परिस्थिति में वज़ीर अली को पकड़ना चाहते थे। वह अंग्रेज़ी सत्ता के लिए घातक सिद्‌ध हो रहा था। ऐसे में उसका खेमे में घुसकर कारतूस लाने का कार्य जोखिम भरा था परंतु फिर भी उसे इस कार्य में सफलता प्राप्त हुई। इससे यह सिद्‌ध होता है कि वह साहसी तथा बुद्‌धिमान था।

12. (क) मीराबाई जी ने अपने पदों में श्रीकृष्ण को भक्तों की पीड़ा को हरने वाला बताया है। मीरा के प्रभु श्रीकृष्ण ने द्रोपदी के सम्मान की रक्षा करने के लिए वस्त्र बढ़ाकर उनकी सहायता की थी। अपने भक्त प्रह्लाद के प्राणों की रक्षा करने के लिए प्रभु श्रीकृष्ण ने नरहरि का रूप धारण कर अवतार लिया था तथा शत्रुओं से अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की थी। बूढ़े गजराज की करुण पुकार सुनकर प्रभु ने मगरमच्छ से उनकी रक्षा की थी। इसी प्रकार से प्रभु अपने सभी भक्तों के कष्टों को दूर करते हैं। मीराबाई जी भी अपने आराध्य श्री हरि से यही प्रार्थना करती हैं कि प्रभु उनके कष्ट को भी दूर करें।

(ख) 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने पर्वतों के सौंदर्य का वर्णन करने के साथ-साथ प्रकृति का मानवीकरण भी किया है। कविता में वृक्षों को ऊँची आकांक्षाओं से भरे हुए मानव के रूप में चित्रित किया गया है। उनके हृदय में ऊँचा उठने की इच्छा विद्यमान है और वे आकाश की ओर अनिमेष भाव से अपलक, स्थिरतापूर्वक देख रहे हैं। इसके साथ ही कवि ने बादलों के छा जाने से रहस्यमयी वातावरण प्रकट होने के कारण शाल के वृक्षों को मानवीय प्रवृत्ति के समान भयभीत दर्शाया है–

'धँस गए धरा में समय शाल!'

इस प्रकार इस कविता में वृक्षों को मानवीय चेष्टाओं से युक्त पाया गया है। अतः वृक्षों को मानव के रूप में प्रतिबिंबित किया गया है।

(ग) कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी कविता 'आत्मत्राण' में ईश्वर से कुछ पाने के लिए प्रार्थना नहीं की है बल्कि आंतरिक शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की है। कवि ने ईश्वर से विपदा में निर्भय बनाने की प्रार्थना की है। दुख को समाप्त करने की प्रार्थना न करते हुए दुख का सामना कर सकने की प्रार्थना की है। कोई सहायता न मिलने की स्थिति में कवि अपने बल पौरुष पर विश्वास न खोने की प्रार्थना करते हैं। ईश्वर से कवि सुख की कामना न करते हुए दुख को सहन करने की शक्ति चाहते हैं। कविता में कवि ईश्वर के प्रति निस्वार्थ भाव से विश्वास बनाए रखने की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार यह प्रार्थना गीत अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है।

13. (क) टोपी को कक्षा में बार-बार असफल होने के कारण सहपाठियों, मित्रों तथा शिक्षकों से भी बार-बार अपमानित होना पड़ता था। बच्चे उसे ताने मारकर इसी कक्षा में दो बार रहने की बात करते थे। कक्षा में शिक्षक भी उसे अनदेखा कर उसके द्वारा किए गए कार्य पर उसका मज़ाक उड़ाते थे। बच्चों द्वारा किए गए मज़ाक से वह लज्जित होता था परंतु शिक्षकों द्वारा जब उसे नीचा दिखाया जाता था तब उसका हृदय अपमान से भर जाता था। इसके बाद घरवाले भी उसके कोमल से बाल मन को अपने सूक्तिबाणों से छलनी करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। सभी घरवाले उसके फेल हो जाने के कारण उसको उसके भाई मुन्नी बाबू तथा भैरव से कम आँकते थे। इसके कारण उसमें हीन भावना आ गई थी।

(ख) धर्म लोगों के मन में भक्ति को जगाता है तथा सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता हैं परंतु इसी धर्म में जब स्वार्थ की भावना आ जाए तो समाज का नैतिक पतन होने लगता है। हरिहर काका के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। हरिहर काका एक साधारण व्यक्ति थे जिनकी धर्म के प्रति गहरी आस्था थी। उनके पास उनकी ज़मीन थी जिसका कोई वारिस नहीं था। भाइयों के परिवार के साथ हरिहर काका के मनमुटाव का लाभ उठाते हुए महंत ने धर्म की आड़ में हरिहर काका की ज़मीन को हथियाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहा। हरिहर काका की महंत तथा ठाकुरबारी पर अपार श्रद्धा थी। इसी कारण वे महंत की सभी बातों को मानते थे। परंतु जब महंत ने उनकी ज़मीन हथियाने के लिए उनके साथ छल कर उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी तो इससे वे मानो आसमान से धरती पर गिर गए। इस घटना ने उन्हें जितना शारीरिक कष्ट पहुँचाया था उतने ही वे मानसिक रूप से भी पीड़ित थे। इस घटना के बाद वे किसी पर पूर्ण रूप से विश्वास नहीं कर सके।

(ग) 'सपनों के-से दिन' पाठ में लेखक ने बच्चों की मानसिक स्थिति का वर्णन करने के साथ-साथ उस समय की परिस्थितियों का वर्णन भी किया है। उस समय अभिभावक अपने घर के बच्चों को अधिक पढ़ाना आवश्यक नहीं मानते थे। उनका यह मानना था कि अधिक पढ़-लिखकर कोई फायदा नहीं है। वे बस बच्चों को हिसाब-किताब का काम सिखाकर काम पर लगा देना चाहते थे। उस समय की परिस्थिति के अनुसार लोग पढ़ाई में न तो धन ही खर्च करना चाहते थे और न ही समय। दूसरा कारण यह भी था कि उस समय पढ़ाई पर अधिक खर्च करना पड़ता था। इतना धन खर्च करना सामान्य मनुष्य के वश में नहीं था। कुछ गिने-चुने परिवार के बच्चे ही शिक्षा ग्रहण कर पाते थे। आज की स्थिति इससे भिन्न है। आज अभिभावक बच्चों की पढ़ाई के प्रति जागरूक हैं। समाज में प्रतियोगिता अधिक बढ़ने के कारण आज प्रायः सभी अपने बच्चों को पढ़ने भेजते हैं। इसके साथ ही सरकार की तरफ से भी सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान कराने के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

14. (क) **संयुक्त परिवार**

समय कभी समान नहीं रहता है। यह हमेशा बदलता रहता है। पुराने समय से चली आ रही संयुक्त परिवार की परंपरा अब बदल चुकी है। आज लोग काम-काज में व्यस्त होने के कारण अकेले रह रहे हैं। अधिकांश लोगों को नौकरी की तलाश में अपने परिवार तथा माता-पिता से दूर जाना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में लोग संयुक्त परिवार से अलग होकर रहने को बाध्य हैं। शहरों में फ्लैट परंपरा के बढ़ने के कारण भी लोग अकेले एक परिवार में रह रहे हैं। संयुक्त परिवार में न रहने के कारण लोगों को भारी नुकसान भी उठाना पड़ता है। एक परिवार के कारण बच्चों की शिक्षा, पालन-पोषण के लिए माता-पिता को परेशानी होती है। माता-पिता दोनों को ही जब काम के लिए बाहर जाना पड़ता है तब बच्चों को किसी अपरिचित के साथ छोड़ना सुरक्षित नहीं होता है। संयुक्त परिवार में बच्चों की देखभाल करने के लिए दादा-दादी होते हैं जिनकी निगरानी में बच्चों में अच्छे संस्कार तो उभरते ही हैं। साथ ही साथ बच्चे सुरक्षित भी होते हैं। इसके साथ ही बुज़ुर्गों की भी देखभाल हो जाती है। बुजुर्गों को अकेला छोड़ना भी उचित नहीं है। बढ़ती उम्र में उन्हें भी अपने परिवार के साथ की आवश्यकता होती है।

(ख) **वन और पर्यावरण का संबंध**

वन के साथ पर्यावरण का संबंध बहुत गहरा है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पृथ्वी के एक तिहाई भाग का हरा-भरा रहना अत्यंत आवश्यक है। वन प्राणियों के लिए जीवनदायक है। वनों से पर्यावरण स्वच्छ रहता है। जो प्रदूषण की रोकथाम में सहायक है। इससे ध्वनि प्रदूषण की भयंकर समस्या पर भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। वन हमारे लिए लकड़ी, स्वच्छ वायु, फल और विभिन्न औषधियों की आपूर्ति करते हैं। दुर्भाग्यवश आज भारत में केवल 23% वन ही बचे हैं। जैसे-जैसे उद्योगों का विस्तार हो रहा है तथा शहरीकरण हो रहा है, वैसे-वैसे वन काटे जा रहे हैं। आने वाले समय में इसका बहुत ही बुरा प्रभाव देखा जा सकता है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे वनों की संख्या में कमी आ रही है। ऐसी परिस्थिति में हमे इसकी रोकथाम करनी होगी। यदि समाज का हर एक व्यक्ति वनों का संरक्षण तथा पर्यावरण का बचाव करना अपनी ज़िम्मेदारी समझे तो इससे वनों के कटाव को रोका जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य बनता है कि वह यथासंभव पेड़ लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित रखे। इस कार्य में एक छोटा सा प्रयास भी बड़ा सहायक सिद्ध हो सकता है।

(ग) **'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत।'**

समय को बिना गँवाए कार्य करना चाहिए। समय का एक-एक पल अत्यंत मूल्यवान होता है। बीता हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता है। इसलिए हमें समय के महत्व को समझते हुए उसका प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए। एक बार यदि समय बीत जाता है तो पश्चाताप के अलावा और कुछ हाथ नहीं लगता। मनुष्य को समय का महत्व समझते हुए सोच-समझकर कार्य करना चाहिए। वैसे तो समय का महत्व सभी के लिए समान है परंतु विद्यार्थी जीवन के लिए समय विशेष महत्व रखता है। विद्यार्थियों को अपना अधिक से अधिक समय अध्ययन में लगाना चाहिए। समय बहुत मूल्यवान होता है और बुद्धिमान व्यक्ति इसका प्रयोग बहुत सोच-समझकर करता है। समय धन से अधिक मूल्यवान होता है क्योंकि धन खर्च हो जाने के बाद उसे पुनः अर्जित किया जा सकता है परंतु एक बार समय बीत जाने के बाद उसे पुनः वापस नहीं लौटाया जा सकता। अतः हमें समय का सही उपयोग समझना चाहिए।

15. (क) सेवा में

प्रधानाचार्य

केंद्रीय विद्यालय, य०र०ल० नगर

दिल्ली

दिनांक : 12 अगस्त, 20xx

विषय : विद्यालय में खेल सामग्री उपलब्ध कराने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा 10 'ब' का छात्र हूँ। इस पत्र के माध्यम से मैं आपसे विद्यालय में खेल सामग्री उपलब्ध करवाने का अनुरोध करना चाहता हूँ।

हमारा विद्यालय अगले महीने अंतर विद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहा है परंतु दुर्भाग्यवश हमारे पास उचित खेल सामग्री उपलब्ध नहीं है।

अतः मेरा आपसे यह अनुरोध है कि विद्यार्थियों को अभ्यास करने के लिए उचित खेल सामग्री उपलब्ध कराई जाए। जिससे विद्यालय के विद्यार्थी प्रतियोगिता में जीत हासिल कर विद्यालय का नाम रौशन कर सकें।

सधन्यवाद

भवदीय

पुष्पक तिवारी

कक्षा 10 'ब'

अथवा

(ख) सेवा में

संपादक महोदय

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली।

दिनांक : 5 जुलाई, 20xx

विषय : बिजली आपूर्ति के संबंध में शिकायत।

महोदय,

आपके दैनिक समाचार पत्र द्वारा मैं विद्युत विभाग के अधिकारियों का ध्यान हमारे क्षेत्र में इन दिनों लगातार बिजली जाने से लोगों को हो रही परेशानियों की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ।

आजकल इतनी गर्मी में बिजली चले जाने के कारण लोगों में त्राहि-त्राहि मची हुई है। बच्चों की पढ़ाई भी ठीक प्रकार से नहीं हो पा रही है। आप इसे अपने समाचार पत्र में दैनिक स्तंभ के अंतर्गत छापकर हमें अनुगृहित करेंगे ताकि विद्युत अधिकारियों तक हमारी यह समस्या पहुँच सके।

अतः आपसे अनुरोध है कि इसके विषय में अपने अखबार में छापकर हमें अनुगृहित करें।

सधन्यवाद

भवदीय

विनय त्रिपाठी

16. (क)

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण, गौतमबुद्ध नगर

सार्वजनिक सूचना

दिनांक : 10 जनवरी, 20xx

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की बोर्ड की बैठक में ग्रेटर नोएडा विस्तार महायोजना - 20xx में कुछ संशोधन अनुमोदित किए गए हैं। अनुमोदित संशोधनों का संक्षिप्त विवरण हमारी वेबसाइट www.reaternoidaauhtority.in पर उपलब्ध है। उपर्युक्त संशोधनों पर यदि कोई आपत्ति/सुझाव हो तो सूचना प्रकाश की तिथि से 15 दिन के अंदर प्रातः 9.30 बजे से सायं 6:00 बजे तक प्राधिकरण के कस्टमर रिलेशन पर महाप्रबंधक को संबोधित करते हुए लिखित रूप से दिया जा सकता है।

मुख्य कार्यालय अधिकारी

ग्रेटर नोएडा

अथवा

(ख)

दिल्ली पब्लिक स्कूल, य०र०ल० नगर

सूचना

ग्रीष्मावकाश के संबंध में

दिनांक : 30 अप्रैल, 20xx

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि ग्रीष्म-अवकाश के कारण विद्यालय दिनांक 1 मई 20xx से 30 जून 20xx तक बंद रहेगा। विद्यालय पुनः 1 जुलाई 20xx को समयानुसार खुलेगा और सभी कक्षाएँ प्रारंभ हो जाएँगी।

प्रधानाचार्य

दिल्ली पब्लिक स्कूल

17. (क)

आपके शहर में खुला है नया वॉटर पार्क

सभी आमंत्रित हैं

बच्चे हों या बूढ़े सभी के लिए मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

उपलब्ध सुविधाएँ–

- पानी के खेल : वॉटर पोलो, तैराकी
- रोमांचक झूले एवं चकरियाँ
- मनोरंजक खेल-तमाशे
- कई मनभावक झाकियाँ

बुकिंग के लिए संपर्क करें : दूरभाष संख्या xxxxxxxxxx

अथवा

(ख)

खुल गया **खुल गया**

आनंद योग केंद्र

अगर आप ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी बीमारियों से ग्रसित हैं तो आनंद योग केंद्र जरूर आएँ।

समय - सुबह 8:00 बजे से सायं 10:00 बजे तक

स्थान : मालरोड, सिविल लाइंस मेट्रो स्टेशन के पास दिल्ली

मुख्य आकर्षण:

- योग का अभ्यास
- प्राणायाम
- आहार-विहार
- मंत्र के साथ प्रार्थना

आइए सब मिलकर योग अपनाकर अपने जीवन को सुखमय बनाएँ।

संपर्क करें– 9820xxxxxx

18. (क) **'न्याय-अन्याय'**

एक गाँव में एक वृद्ध मनुष्य रहता था। उसके दो पुत्र थे। एक का नाम गोविंद था और दूसरे का नाम बनवारी था। गोविंद बनवारी से तीन वर्ष बड़ा था। एक दिन जब वृद्ध ने स्वयं को मृत्यु के करीब पाया तो उसने अपने दोनों पुत्रों को बुलाकर एक गाय दी। यह गाय उसकी जमा पूँजी थी। इसी गाय का दूध बेचकर वह अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करता था। दोनों भाइयों ने इसका बँटवारा किया। बनवारी बड़ा चतुर था उसने गोंविद से कहा कि गाय का अगला हिस्सा गोविंद का तथा पिछला हिस्सा बनवारी का है। गोविंद भाई की चाल को समझ नहीं पाया। उसने खुशी-खुशी हाँ कर दिया। इस प्रकार शर्त के अनुसार गोविंद गाय को चारा खिलाता और बनवारी गाय का दूध निकालता। धीरे-धीरे बात गोविंद की समझ में आने लगी। उसे लगने लगा कि उसके साथ अन्याय हुआ है। इसके बाद गोविंद ने गाय को चारा खिलाना बंद कर दिया। इसके कारण जब गाय ने दूध देना बंद कर दिया तब बनवारी को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने अपनी गलती मानते हुए गोविंद से माफी माँगी और दूध आधा-आधा बाँटने के लिए तैयार हो गया।

शिक्षा– इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि कभी भी किसी के भोलेपन का लाभ उठाकर किसी के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए। कभी भी चाल उलटी पड़ सकती है और हमारा नुकसान हो सकता है।

अथवा

(ख) प्रेषक – abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता – pqr@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) – xyz@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) – mno@gmail.com

विषय : टीवी रिपेयर कराने के सबंध में।

महोदय,

आपसे विनम्र निवेदन है कि मैंने आपकी कंपनी से दो महीने पहले एक नया टीवी खरीदा था। कुछ सप्ताह तक तो यह बहुत अच्छा चला लेकिन बाद में काफी परेशानी आने लगी। इसी कारण से इसे रिपेयरिंग सेंटर भेजा था। रिपेयर होकर आने के बाद कुछ दिनों तक तो यह ठीक चला लेकिन कल रात अचानक इसकी पिक्चर ट्यूब खराब हो गई। आपसे निवेदन है कि इस टीवी को नए टीवी से बदलने की कृपा करें।

टीवी वारंटी कार्ड का स्क्रीनशॉट संलग्न है।

भवदीय

क०ख०ग०